Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
June 2024 5(6), 2131–2133

THE ROLE OF FASHION IN SHAPING CULTURAL AND PERSONAL IDENTITY IN ADOLESCENCE

किशोरावस्था में सांस्कृतिक और व्यक्तिगत पहचान को आकार देने में फैशन की भूमिका

Shalini Alha [1], Dr. Veerpal Kaur [2]

[1] Associate Professor Home science, Ch. Balluram Godara Government, Girls College, Sri Ganganagar
[2] Associate Professor Home Science, Art Craft & Social Science Tantia University, Sri Ganganagar

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i6.2024.2913

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

ABSTRACT

English: Historically, fashion has always been a mirror of human existence. It is a means of expressing the cultural values of any community to the world. Along with this, the clothes or costumes found in a particular culture also reflect the personal values, beliefs, preferences and cultural background of the people of that culture or community. Thus, fashion is a strong medium to express the identity of that time or era through clothes and accessories. Physical development takes place at a rapid pace during adolescence. Hormonal changes occur in the body, so at this time there is a need for cultural and personal changes. Fashion is not only helpful in personality development, it also makes the adolescent child aware of his culture.

Hindi: ऐतिहासिक रूप से देखा जाए तो फैशन हमेशा ही मानव अस्तित्व का आईना रहा है यह किसी भी समुदाय की सांस्कृतिक मूल्यों को दुनिया के सामने व्यक्त करने का जरिया है, साथ ही किसी सांस्कृति विशेष् में पाएँ गये कपड़े या पोशाक उस संस्कृति या समुदाय के लोगों के व्यक्तिगत मूल्यों, विश्वास, पसंद तथा सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को भी दर्शाता है। इस प्रकार फैशनउस समय या काल की पहचान को कपड़ों व सहायक सामग्री के माध्यम से व्यक्त करने का एक मजबूत माध्यम है। किशोरावस्था में शारीरिक विकास तीव्र गति से होता है शरीर मे हार्मोन से संबंधित बदलाव आते है, ऐसे में इस समय उनके सांस्कृतिक व व्यक्तिगत की आवश्यकता होती है। फैशन न केवल व्यक्तित्व निर्माण में सहायक है साथ ही यह किशोर बालक को उसकी संस्कृति से भी अवगत करवाता है।

Keywords: Fashion, Identity, Culture, Clothing, Social Values, फैशन, पहचान, संस्कृति, पोशाक, सामाजिक मूल्य

1. प्रस्तावना

फैशन का अभिप्राय सिर्फ किसी व्यक्ति द्वारा धारण किए गए कपड़ों से ही नहीं बल्कि इससे कहीं ज्यादा है। यह आत्म अभिव्यक्ति का एक शक्तिशाली रूप हैं जो कि समाज या दुनिया के सामने उसकी पहचान को प्रदर्शित करता है। किसी किशोर द्वारा किस तरह के परिधान या सहायक सामग्री चुनी जाती है यह उसकी व्यक्तिगत पसंद व आत्मभावना को दिखाता है इस प्रकार फैशनव्यक्तित्व निर्माण के साथ साथ सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को भी व्यक्त करने का माध्यम है।

1.व्यक्तिगत पहचान निर्माण और फैशन

2.सांस्कृतिक पहचान को प्रभावित करता फैशन

3.फैशन द्वारा आत्म अभिव्यक्ति

4.परम्परागत संस्कृति और फैशन

1. **व्यक्तिगत पहचान निर्माण और फैशनः-** परिधान वह माध्यम है जिसके द्वारा किसी भी किशोर के व्यक्तित्व का पता चलता है और जब यह परिधान फैशन के अनुरूप होता है तो यह व्यक्तिगत रुचि व मूल्यों को भी प्रदर्शित करता है। कई बार कुछ कहे बिना ही सिर्फ कपड़ों से किशोर के व्यक्तित्व का पता चल जाता है अतः यह आत्म अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। कपड़े किशोर के आत्मविश्वास को बढ़ाते हैं और उन्हें सशक्त बना सकते हैं। जब व्यक्ति फैशन के अनुसार कपड़े पहनता है तो समूह में वह कहीं अधिक आत्मविश्वासी महसूस करता है और इस प्रकार उसके सकारात्मक व्यक्तित्व का निर्माण होता है।वह समूह में अपनी बात दृढ़ता से ही रख सकता है और समूह में उसकी अलग पहचान बनती है।

2. **सांस्कृतिक पहचान को प्रभावित करता फैशनः-** फैशन द्वारा किसी भी समाज विशेष में व्याप्त संस्कृति के दृश्य अभिव्यक्ति होती है क्योंकी कपड़ों द्वारा कोई भी व्यक्ति उस समाज में मौजूद परंपराओं और विरासत को व्यक्त कर सकता है। कपड़ो की शैली, पैटर्न व रंग उस स्थान विशेष कि सांस्कृतिक संकेतों को प्रदर्शित करता है साथ ही यह धारण करने वाले किशोर के उसकी संस्कृति के प्रति जुड़ाव को भी व्यक्त करता है। पारंपरिक त्योहारों व पर्वों पर ज्यादातर युवा वर्ग परंपरागत वस्त्र धारण करते हैं और साथ ही वे युवा लोग सामान्य अवसरों पर पाश्चात्य परम्पराओं के परिधान धारण करते हैं यद्यपि फैशन में बने रहने का ये आसान तरीका है परंतु ऐसा करके वे अपनी संस्कृति को नहीं भूलते वरन जहाँ जरूरी है परम्परागत परिधान भी धारण करते हैं।

3. **फैशन द्वारा आत्म अभिव्यक्तिः-** फैशन का इस्तेमाल प्राचीन काल से ही अभिव्यक्ति के लिए किया जा रहा है। लोग अपनी पहचान को व्यक्त करने के लिए कपड़ों और सहायक सामग्री का इस्तेमाल करते हैं। विभिन्न काल में अलग अलग संस्कृतियों ने स्वयं को अलग अलग तरीके से अभिव्यक्त करने के लिए फैशन का प्रयोग किया है ।यह सामाजिक प्रतिष्ठा व धन के प्रदर्शन से जुड़ा हुआ था। कपड़ों की शैली किसी व्यक्ति की राजनीतिक या धार्मिक मान्यताओं को भी प्रदर्शित करने का तरीका है। मध्य युग में फैशन पर धर्म व वर्ग का बहुत ज्यादा प्रभाव था। उच्च वर्ग के लोग अधिक चमकीले व ज्यादा सजावट किए हुए वस्त्र धारण करते थे, जबकि निम्न वर्ग स्लेटी या फीके हरे जैसे हल्के रंग पहनते थे । इस प्रकार आत्म अभिव्यक्ति सामाजिक व आर्थिक स्तर से जुड़ी हुई थी। परिधान या कपड़े आत्म अभिव्यक्ति या आत्म खोज के लिए एक सुरक्षित स्थान प्रदान करते हैं। जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने वास्तविक पहचान को अपनाकर समान विचारधारा के समुदाय से जुड़ सकता है। उन्नीसवीं शताब्दी में फैशन उद्योग में बहुत अधिक उछाल देखा गया। उत्पादकता बढ़ने से फैशन सर्वसुलभ हो गया। अब फैशन का उपयोग व्यक्तिगत शैली व पहचान को व्यक्त करने के लिए किया जाने लगा। इससे व्यक्तित्व का रचनात्मक पहलू सामने आया और वह आत्मविश्वास को बढ़ाता हुआ दिखाई देने लगा।

4. **परम्परागत संस्कृति और फैशनः-** भारतीय परंपरागत संस्कृति में पहनावे का विशेष महत्व है । पारंपरिक वेशभूषा देश की संस्कृति की तरह ही विविध है । जिस तरह भारत में अलग अलग क्षेत्रों व राज्यों में भाषा जीवनशैली व भोजन में विविधता देखी जाती है इसी तरह परिधानों में भी विविधता परिलक्षित होती है। परिधानों में यह अंतर यहाँ की भौगोलिक विविधता के कारण है। इसके अलावा भारतीय लोगों की वेशभूषा, सांस्कृतिक परंपराओं ,धर्मों ,जातियों, भाषाओं के आधार पर भी अलग अलग है । इन सबके साथ ही पहनावा सांस्कृतिक का वह अंग है, जिसके द्वारा न केवल उस स्थान विशेष को अलग पहचान मिलती है अपितु कई बार यह परंपरागत विरासत अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहुँच कर विश्व भर के लोगों द्वारा पसंद किया जाता है। उदाहरण के लिए भारतीय परम्परागत परिधान लहंगा- चोली की नकल कर पाश्चात्य परिधान स्कर्ट में भी कुछ डिजाइन डाले जाते हैं । यहीं नहीं साड़ी भी सैकड़ों सालों से परम्परागत परिधान रही है और आधुनिक फैशन में अपना मजबूत स्थान रखती है। इस प्रकार यह न केवल भारतीय संस्कृति को सहेजे हुए हैं बल्कि देश की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत , इतिहास, परंपरा व कलात्मकता का अभिन्न अंग है और साथ ही फैशन उद्योग को समृद्ध बना रही है।

2. निष्कर्ष

वर्तमान समय में फैशन न केवल किशोर के व्यक्तित्व निर्माण या व्यक्तिगत पह्चान को आकार देने में सहायक है परंतु साथ ही यह हमारी सांस्कृतिक धरोहर को भी बचाए रखने में अपना योगदान दे रहा है। फैशन उद्योग लगातार ऐतिहासिक डिजाइन जैसे मेहराब ,गुंबद ,किलों के भित्तिचित्र, विभिन्न मंदिरों की कलाकृतियों को सहेज कर इसका इस्तेमाल न केवल परिधानों की डिजाइन में बल्कि आभूषणों में भी कर रहा है। सामान्यतः ये डिजाइन स्वर्ण आभूषणों में देखे जाते हैं । फैशन की प्रकृति गतिशील होती है और लोगों की रुचियों के अनुसार यह लगातार बदलता रहता है। लेकिन इस बदलाव में भी जो डिजाइन हमारी परंपराओं से जुड़े हैं वे आसानी से समाज में प्रचलित हो जाते हैं । लोगों की वेश भूषा के द्वारा ही यह पता चलता है कि हम कैसे समाज से संबंध रखते हैं । इस प्रकार फैशन व्यक्तिगत एवं सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। साथ किशोरावस्था में होने वाले बदलावों के साथ उन्हें एक अलग पहचान दिलाने में सहायक सिद्ध होता है।

CONFLICT OF INTERESTS

None.

ACKNOWLEDGMENTS

None.

REFERENCES

Dr. Vrinda Singh, Textile Science and Apparel, Panchsheel Publications.
Dr. Pramila Verma, Textile Science and Apparel, Bihar Hindi Granth Academy, New Delhi.
Dr. Vrinda Singh, Human Development, Panchsheel Publications.
Dr. Jaishankar Mishra, Social History of Ancient India, Bihar Hindi Granth Academy, New Delhi, page no. 16-17.
Dr. Rupnarayan Tripathi, Dr. Ramdev Sahu, Fundamentals of Indian Culture, Shyam Publications, Jaipur, page no. 1-4.